रात्रीक्लास ओमशान्ति 28-1-88

सभी का कनेक्शन है शिव बाबा के साथ। जब तक शिव बाबा के ख़ज़ाने में जमा न हो तो उसका कुछ भी बनता नहीं है। शिव बाबा साथ कनेक्शन है ब्रह्मा द्वारा। सेन्टर खुलते हैं तो शिव बाबा के ख़ज़ाने में जमा होना चाहिए। ऐसे नहीं अपना आपे ही जाकर खोले। जैसे लीला ने कुछ भी करती है, जो मिलता है जमा कुछ भी नहीं है। जब तक शिव बाबा के पास न आये। ख़ज़ाने में पहुंची नहीं तो मिली कुछ भी नहीं। और ही बड़ा भारी डन्ड चढ़ जाता है। ऐसे नहीं रेस कर बिगर श्रीमत गीतापाठशाला खोल दें, सेन्टर खोल दिया। उनको कुछ भी बनता नहीं है। शिव बाबा के ख़ज़ाने से उनका कनेक्शन है नहीं। अगर यहां से सिख जाये बनाते हैं तो भी बहुत कम पद पायें लेंगे। अशुध अहंकार किसका बाप के पास चल न सके। बाप तो समर्थ है ना। शिव बाबा साथ अर्द्धगा कोई चल न सकेंगे। गिर पड़ेंगे। क्योंकि शिव बाबा एक ही हट्टी है ना। शिव बाबा ब्रह्मा बाबा से कनेक्शन ही नहीं तो फायदा ही क्या। और ही गिर पड़ेंगे। अशुध अहंकार कोई का भी बाप पास चल न सके। पुरुषार्थ रहता है कैसे भी कर के बाप से ऊंच ते ऊंच पद पावें। दैवीगुण धारण करें। लड़ने-गड़ने वाले पद पाये न सकेंगे। बहुत2 मीठा बनना है। बाप समझाते हैं याद की यात्रा। यह बड़ी ऊंची बात है। ऐसे कोई कब समझ न सके पढ़ाई से यह पद मिल सकता है। विश्व का मालिक बनना है। इसमें गुप्त बड़ी मेहनत है। स्वभाव को बदलना बड़ा मुश्किल है। देह अभिमान के साथ गिर और विकार भी आते हैं। कितना भी समझाओ पूंछ सीधा नहीं होता है। बाबा कितना क्लीयर कर समझाते हैं। है बहुत सहज। परन्तु मेहनत बहुत है। आत्माभिमानी बनना है ना। आत्माभिमानी बन न सुनेंगे तो इतना असर नहीं होगा। आत्मा में संस्कार धारण होती है ना। देह-अभिमान कारण मनुष्यों की हालत क्या हुई है। अब फिर आत्माभिमानी बनने से तुम कितना ऊंच पद पाते हो। सबजेक्ट सब से तीखी है आत्म-अभिमानी बनने की। नालेज तो सहज है। गृहस्थ व्यवहार में रहना भी कोई बड़ी बात नहीं। समझ कर फिर समझाना है। दूसरे [illegible] तो जाना ही नहीं है। क्रिश्चन लोग बाईबुल के सिवाय और कुछ उठाते हैं नहीं हैं। तुमको कोई शास्त्र आद की दरकार नहीं। गीता भी भक्ति मार्ग की है। वह हम क्यों उठावें। देह-अभिमान गया तो सब विकार चले जावेंगे। ऐसी अवस्था में जाना है। हिसाब-किताब चुकुत कर जावेंगे। वहां तो विकार की बात ही नहीं। योगबल से सारे विश्व को पवित्र बनाते हैं। इतनी योग में ताकत है। एक दिन समझेंगे योग यथार्थ यह है। बाकी है हठयोग। हठयोग में यह भी एक चित्र बनाना चाहिए। रस्सी ऊपर से डाल फिर निकालते हैं। देखना चाहिए क्या2 सिखलाते हैं। तुमको मना नहीं है शुद्ध बुधि चाहिए। जैसे हनुमान का मिशाल, जाकर जूतों में बैठा। उनको कोई हिलाये न सके। तुम भी महावीर हो ना। चाहिए बहुत बहादुर। निडर भी हो। ज्ञान से घेराव डालना है। तुम ने रावण राज्य में पर घेराव डाला है। विजय जरूर पायेंगे। ऐसे बहादुर बहुत थोड़े हैं। पूछे बिगर तो कोई जाये न सके। नहीं तो आब्रू गंवाते हैं। चलन, वातावरण से। होता तो सब ड्रामा अनुसार ही है। जो सर्विस पर हैं उन्हों की ही बात है। आगे चल कर ऐसे2 क्लीयर चित्र निकलेंगे जो चित्र से ही आपे ही समझ जावेंगे। कहना भी सब को यही है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप ही पतित-पावन है। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगम युगे आता हूं। तो उन्हों ने फिर युगे2 कह दिया है। संगम युगे तो चाहिए ना जो कलियुग बदल सतयुग हो। पुरुषार्थ तो बच्चे बहुत करते रहते हैं। बच्चे खुद भी समझ जावेंगे कौन निमित बनते हैं। अभी मनुष्य समझदार बनते हैं। तभी प्रधान माना बेसमझ। बाप कहते हैं रावण राज्य में तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो। सर्विस करने वाले बच्चे ही बाप के दिल पर चढ़ते हैं। मलदेरों से आते हैं वह और ही तीखे हो जाते हैं। गैलप करते रहते हैं। तुम बच्चों ने तो हिस्ट्री सुनी है इन्हों ने घर-बार कैसे छोड़ा। कैसे रात को भागे। फिर व इतने बच्चों को बैठ पाला। इसको ही भठी कहा जाता है। फिर भठी से नम्बरवार निकलते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड नाईट। और नमस्ते।